कलीसिया के संगठन के लिए बाइबल का दृष्टिकोण

कलीसिया में लीडरशिप के अध्ययन के लिए कलीसिया के संगठन की समझ होनी बहुत आवश्यक है। नये नियम के अनुसार प्रभु की कलीसिया कैसे संगठित होनी चाहिए? ज़्या इसमें याजक प्रणाली होनी चाहिए जिसमें पूरे संसार के लिए एक बिशप हो। ज़्या इसमें बिशप होने चाहिए जो डायसिज़ों (धर्म क्षेत्रों) पर नियन्त्रण रखते हों? ज़्या सिनडों या कन्वेंशनों के हाथ में शज़्ति होनी चाहिए? ज़्या मण्डलियां राष्ट्रीय या अन्तरराष्ट्रीय संगठनों से जुड़ी होनी चाहिए या उन्हें अपना प्रबन्ध स्वयं करना चाहिए? ज़्या स्थानीय कलीसिया का प्रचारक इन्चार्ज होना चाहिए? मसीह के पीछे चलने का दावा करने वाले जितने भी अलग – अलग संगठन हैं कलीसिया के संगठन के बारे में उतनी ही शिक्षाएं होंगी।

ज़्योंकि हम नये नियम की कलीसिया बनने के लिए समर्पित हैं, इसलिए हमें यह पता होना आवश्यक है कि नये नियम की कलीसिया कैसे संगठित हुई, इसके अगुवे कौन थे, और उन्होंने ज़्या किया।

प्राथमिक संगठन

सबसे पहले, हमें कलीसिया के प्राथमिक संगठन पर विचार करना चाहिए। ''प्राथमिक'' से हमारा भाव कलीसिया के संगठन का ''मूल'' या ''बुनियाद'' है जिसे प्रभु के लोगों के लिए इस्तेमाल करने पर ''कलीसिया'' शज़्द के विश्वव्यापी तथा स्थानीय उपयोग से मेल खाता है।

''कलीसिया'' शज़्द का ज़्या अर्थ है?

कलीसिया के लिए प्रचलित अंग्रेज़ी शज़्द ''चर्च'' के लिए भी यूनानी भाषा का शज़्द *एकलेसिया* है। यह शज़्द *एक* जिसका अर्थ ''से बाहर'' और *केलियो* जिसका अर्थ ही ''बुलाना'' है, से लिया गया है। इस कारण अज़्सर इसका अर्थ ''बुलाए हुए'' लिया जाता है। परन्तु ''बुलाए हुए'' इस शज़्द की सबसे अच्छी *परिभाषा* नहीं होगी। ज़्योंकि इसे ''सभा'' या ''मण्डली'' के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता था।

नये नियम में ''कलीसिया'' शज़्द का इस्तेमाल चार अलग - अलग अर्थों में किया गया है। प्रेरितों 19:32, 39, 41 में, इसका इस्तेमाल आम लोगों की एक सभा अर्थात एक भीड़ के लिए किया गया है। परमेश्वर के लोगों पर लागू करने पर, इसका इस्तेमाल तीन तरह से किया जाता है। इसका इस्तेमाल *विश्वव्यापी कलीसिया* अर्थात पूरे संसार में परमेश्वर के सब लोगों के लिए किया जाता है जिन्हें मसीह के द्वारा उद्धार मिला है:

> ''और मैं भी तुझ से कहता हूं, तू पतरस है। और मैं इस चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे'' (मत्ती 16:18)।
>
> और वही देह, अर्थात कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे (कुलुस्सियों 1:18)।

इसका इस्तेमाल परमेश्वर के लोगों के लिए जो एक विशेष स्थान पर विशेष मण्डली हैं, *स्थानीय कलीसिया* के लिए किया जाता है। रोमियों 16:16 कहता है, ''आपस में पवित्र चुज़्बन से नमस्कार (सलाम) करो: तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार (सलाम)'' (गलतियों 1:2; प्रकाशितवाज़्य 1:20; 2:1; आदि भी देखें)। इकट्ठी हुई कलीसिया को सभा अर्थात *स्थानीय कलीसिया की सभा* भी कहा जाता है (1 कुरिन्थियों 14:19, 23, 26, 28, 35)।

''प्राथमिक या मूल संगठन'' ज़्या है?

फिर कलीसिया का ''मूल संगठन'' ज़्या है? *यह मसीह के साथ निजी मसीही का सज़्बन्ध* अर्थात विश्वव्यापी कलीसिया की विशेषता है, लेकिन यह सज़्बन्ध स्थानीय कलीसिया के संगठन का आधार भी है।

वह सज़्बन्ध ज़्या है? (1) मसीह दाखलता है; प्रत्येक मसीही एक शाखा है (यूहन्ना 15:1-11)। (2) मसीह देह का सिर है; मसीही लोग देह के अंग हैं (1 कुरिन्थियों 12:12; इफिसियों 1:22, 23; कुलुस्सियों 1:18)। (3) मसीही लोगों को मसीह में अर्थात उसकी मृत्यु में बपतिस्मा मिला है और बपतिस्मा लेकर उन्होंने मसीह को पहन लिया है (रोमियों 6:3; गलतियों 3:27)। फिर मसीह मसीही लोगों में वास करता है (कुलुस्सियों 1:27)। इसलिए मसीही लोग मसीह में हैं (इफिसियों 1:13)। (4) मसीही लोगों को चेले कहा जाता है (प्रेरितों 11:26)। इस कारण वे सीखने वाले अर्थात छात्र हैं; और मसीह उनका शिक्षक है। (5) मसीह देह से प्रेम करता है (अलग - अलग अंगों या मसीही लोगों से बनी), देह के लिए मरा, देह का उद्धार करता है, देह का सिर है, देह को शुद्ध करता है, और प्रेम से देह का पालन-पोषण करता है। इसलिए देह मसीह के अधीन है (इफिसियों 5:23-30)। (6) यदि मसीह अपने राज्य का राजा है (यूहन्ना 18:36, 37), तो मसीही लोग उसकी प्रजा अर्थात उसके राज्य के नागरिक हैं। (7) मसीह अच्छा चरवाहा है; हम उसकी भेड़ें हैं (यूहन्ना 10:1-18)। (8) मसीही लोग यह भी कह सकते हैं कि वे अब

जीवित नहीं हैं, बल्कि मसीह उनमें जीवित है (गलतियों 2:20), और उनके लिए ''जीवित रहना मसीह है'' (फिलिप्पियों 1:21)।

लीडरशिप की ज़्या उलझनें हैं?

स्थानीय कलीसिया की लीडरशिप को प्रभावित करने में इस प्राथमिक संगठन के सामने ज़्या रुकावटें आती हैं? पहली बात, *सब* मसीही लोगों का सज़्बन्ध मसीह से है; अगुओं (उदाहरण के लिए, प्राचीनों/ऐल्डरों, डीकनों, प्रचारकों) का मसीह से अन्य सदस्यों की अपेक्षा गहरा सज़्बन्ध नहीं है। यह जानकर कलीसिया के अगुओं को विनम्र रहने में सहायता मिलनी चाहिए। दूसरी बात मसीह के साथ मसीही लोगों का सज़्बन्ध (1) *कलीसिया के अगुओं* या (2) *स्थानीय कलीसिया* पर निर्भर नहीं है। मसीही लोगों को मसीह के साथ सज़्बन्ध बनाने या उस तक पहुंचने के लिए कलीसिया के किसी अगुवे द्वारा जानने की आवश्यकता नहीं है। सब मसीही याजक हैं (1 पतरस 2:5, 9); इस कारण हर एक मसीही को मध्यस्थ के रूप में किसी मनुष्य या चर्च के अधिकारी के बिना ही परमेश्वर के सामने आने का विशेषाधिकार मिला है। मसीही लोगों को स्थानीय कलीसिया में सक्रिय रूप से भाग लेना आवश्यक है, परन्तु स्थानीय कलीसिया मसीह के साथ संतोषजनक सज़्बन्ध से अपने आपको रोक नहीं सकती। किसी बुरी कलीसिया में भी अच्छा मसीही मिल सकता है। कुरिन्थुस की कलीसिया में समस्याएं तो थीं, लेकिन विश्वासी मसीही भी थे। यीशु ने सरदीस की कलीसिया को मृत कहा, परन्तु साथ ही कहा, ''पर हां, सरदीस में तेरे यहां कुछ ऐसे लोग हैं, जिन्होंने अपने अपने वस्त्र अशुद्ध नहीं किए, वे श्वेत वस्त्र पहिने हुए मेरे साथ घूमेंगे ज़्योंकि वे इस योग्य हैं'' (प्रकाशितवाज़्य 3:4)।

स्थानीय कलीसिया

यदि मूल रूप में मसीही व्यज़्ति का सज़्बन्ध मसीह से ही है, तो परमेश्वर की योजना में स्थानीय कलीसिया का ज़्या स्थान है?

स्थानीय मण्डली की ज़्या आवश्यकता है?

कुछ धार्मिक शिक्षकों को स्थानीय कलीसिया का कोई कारण नहीं दिखाई देता। यहां तक कि कुछ मसीहियों को भी व्यज़्तिगत तौर पर स्थानीय कलीसिया की कोई आवश्यकता नहीं लगती ज़्योंकि वे उसके सदस्य नहीं होते या उसमें सक्रिय रूप से भाग नहीं लेते हैं।

तो भी, मसीही लोगों के लिए मसीहियों के रूप में ''अकेले जाने'' की कोशिश की अपेक्षा अच्छा यह है कि वे स्थानीय कलीसियाओं में इकट्ठे हों। हमें इसका पता कैसे चलता है? *ज़्योंकि स्थानीय कलीसिया परमेश्वर की योजना का ही एक भाग थी!* इफिसियों 3:9-11 कहता है:

> और सब पर यह बात प्रकाशित करूं, कि उस भेद का प्रबन्ध ज़्या है, जो सब के

> सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त था। ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर स्वर्गीय स्थानों में है प्रगट किया जाए। उस सनातन मनसा के अनुसार, जो उस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी।

यदि कोई यह कहता है, ''जिस तरह मैं कलीसिया के साथ होकर रह सकता हूं वैसे ही मैं इसके बिना भी रह सकता हूं,'' तो वह सचमुच यही कह रहा है कि वह परमेश्वर से अधिक समझ रखता है!

परमेश्वर ने स्थानीय कलीसिया को अपनी योजना में शामिल क्यों किया? सामान्य अर्थ में, *प्रत्येक मसीही और मसीह के सम्बन्ध को दृढ़ करने में सहायता करने और उस सम्बन्ध में और लोगों को लाने में सहायता करने के लिए।*

साफ़ तौर पर, स्थानीय कलीसिया परमेश्वर की योजना में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है कि: (1) मसीही बनना, मसीही बने रहना, और आत्मिक रूप से बढ़ना अकेले रहने की अपेक्षा एक स्नेही तथा सम्भाल करने वाले समूह में अधिक आसान है। (2) स्थानीय कलीसिया में इकट्ठे हुए मसीही शिक्षा व सुसमाचार के प्रचार तथा परोपकार के काम को पूरा कर सकते हैं जो कि वे अकेले रहकर नहीं कर पाएंगे। (3) परमेश्वर के बच्चों के एक समूह की मिलकर आराधना करने के विशेष ढंग से परमेश्वर की महिमा होती है।

स्थानीय कलीसियाएं एक दूसरे से कैसे जुड़ती हैं?

स्थानीय कलीसियाएं एक दूसरे से कैसे जुड़ती हैं? *पहले तो, मसीह की सब स्थानीय मण्डलियों में एकता पाई जाती है।* इस एकता की शिक्षा से भी एकता होती है। प्रभु की कलीसिया में प्रत्येक मण्डली एक होकर रहने का पूरा प्रयास करती है: ''हे भाइयो, मैं तुम से ... बिनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो; और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो'' (1 कुरिन्थियों 1:10)। बेशक, *शिक्षा* में पाई जाने वाली यह एकता *विचारों* की एकता की तरह नहीं है; विश्वासी भाइयों में अलग – अलग विचार होना कोई बुरी बात नहीं है। शिक्षा में एकता के लिए भी व्यवहार की पूर्ण एकता का होना आवश्यक नहीं है। कोई कार्य करने के लिए, प्रत्येक मण्डली प्रभु की इच्छा को पूरा करने का ढंग अपनाने का फैसला अपनी मर्ज़ी से ले सकती है। परन्तु यह एकता एक विश्वास की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न मण्डलियों में समझौता है।

एकता केवल शिक्षा के विषयों पर समझौते के लिए ही नहीं है; प्रेम की एकता भी होती है, जिसमें सभी मण्डलियों से मिलकर ही ''भाईचारा'' बनता है और हर मसीही को इस भाईचारे से प्रेम करना आवश्यक है (1 पतरस 2:17)। इस प्रेम का एक परिणाम यह है कि मण्डलियां अपने आपको दूसरों से बड़ा नहीं समझतीं। एक और लाभ यह होता है कि कुछ सीमा तक वे एक दूसरे को अपने अच्छे कामों से उत्साहित कर सकती हैं।

दूसरा, स्थानीय मण्डलियों में स्वतन्त्रता पाई जाती है। विरोधाभास के रूप में, प्रत्येक मण्डली अन्य दूसरी मण्डलियों से स्वतन्त्र है। इस विचार को व्यज्त करने के लिए हम ''मण्डलियों की स्वायज़ता'' का नाम देते हैं। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक मण्डली अपना प्रबंध स्वयं करती है। परन्तु, ''स्वयं प्रबन्ध करने'' का विचार कुछ भ्रमित करने वाला लगता है जिसका अर्थ कुछ लोग स्वतन्त्र कलीसिया मान लेते हैं। स्पष्टत:, सज़्पूर्ण भाईचारे की तरह, जैसे हर एक मसीही की मसीह के अधीन होने की ज़िज़्मेदारी है जो कि अपने राज्य का राजा है, वैसे ही प्रत्येक मण्डली के लिए भी उसके अधीन होना आवश्यक है। यह मसीह के अधीन रहकर ''स्वतन्त्रता,'' ''स्वशासन,'' या ''स्वायज़ता'' है।

यह सही है कि मण्डलियों की स्वायज़ता के लिए प्रत्येक मण्डली के लिए अपना निर्णय स्वयं लेना आवश्यक है। बड़ी मण्डलियां छोटी मण्डलियों पर शासन नहीं करतीं, न ही कोई कॉन्फ्रैंस, कन्वैंशन या ऐसा संगठन है जो अपनी इच्छा को स्थानीय कलीसिया पर थोप सके।

हम मण्डलियों की स्वायज़ता में ज़्यों विश्वास रखते हैं? इसके कम से कम तीन कारण हैं:

(1) नया नियम प्राचीनों या ऐल्डरों पर अपनी मण्डली पर अधिकार रखने की सीमा ठहराता है: ''उस झुंड को, जो तुज़्हारे बीच में है चराओ; ...'' (1 पतरस 5:2; KJV)। उन्हें उस झुंड के अलावा जिसमें वे रहते थे किसी दूसरे झुंड पर पास्टर या चरवाहे बनकर काम करने का अधिकार नहीं था।

(2) क्षेत्रीय, राष्ट्रीय या अन्तरराष्ट्रीय संगठनों या कलीसियाओं के संगठनों के लिए नये नियम में कोई उदाहरण नहीं मिलता। पहली शताज़्दी की कलीसिया में ऐसा कोई संगठन नहीं था।

(3) यद्यपि यह कारण पवित्र शास्त्र से नहीं लिया गया, परन्तु कहा जा सकता है कि स्थानीय मण्डलियों की एक दूसरे से स्वतन्त्र रहने के प्रबन्ध में ईश्वरीय बुद्धि स्पष्ट है। एक मण्डली के गलत होने पर आवश्यक नहीं कि दूसरी मण्डलियां वैसा ही करें।

कुछ लोग मण्डलियों की स्वायज़ता में यकीन ज़्यों *नहीं* करते?

कुछ लोग अन्तर कलीसियाई संगठनों के लिए उदाहरण के रूप में प्रेरितों 15 अध्याय वाली ''यरूशलेम की कॉन्फ्रैंस'' का उदाहरण देते हैं। परन्तु, (1) ''यरूशलेम की कॉन्फ्रैंस'' कॉन्फ्रैंस करने का लगातार चलने वाला प्रबन्ध नहीं बल्कि एक समय होने वाली घटना थी; (2) इसके लिए उन भाइयों ने, जिनके मन में कुछ प्रश्न थे और वे परामर्श चाहते थे, बिनती की थी; (3) इसमें विशेष भूमिका प्रेरितों की थी, जिनका उज़राधिकारी कोई नहीं था; (4) इस कॉन्फ्रैंस के बाद एक दस्तावेज भेजा गया जो ऐसा नहीं लगता था कि उसे उच्च अधिकारियों द्वारा ''कलीसिया के विधान'' के रूप में इस्तेमाल किया गया हो।

अन्य लोग कलीसियाओं के साथ अपने सहयोगियों के काम के साथ प्रेरितों के काम को उस संगठन के उदाहरण के रूप में, जिसमें उन लोगों को अच्छा लगता है कि प्रेरित कलीसियाओं के विशाल क्षेत्र पर शासन करें, इस्तेमाल करते हैं। परन्तु प्रेरितों में विशेष योग्यताएं थीं और उन्हें विशेष अधिकार दिया गया था और उनका कोई उज़राधिकारी नहीं

था। उनके ''अधिकार'' को आज किसी के लिए भी नमूना नहीं ठहराया जा सकता।

जो लोग ''मिशनरी सोसाइटी'' इस्तेमाल करने में यकीन रखते हैं वे सामान्यतया यही कहते हैं कि स्थानीय कलीसिया अपने दम पर कई काम नहीं कर सकती है, इसलिए कलीसियाओं का संगठन होना आवश्यक है। तथ्य यह है कि मिशन कार्य किसी मिशनरी सोसाइटी के बिना भी किया जा सकता है, जैसा कि कई बार देखने में आता है।

तीसरा, स्थानीय कलीसियाओं में सहयोग होना आवश्यक है। स्थानीय कलीसियाएं जैसे उनमें योग्यता तथा अवसर हों, भले कार्यों में एक दूसरे की सहायता करने के लिए स्वतन्त्र हों और उन्हें होना भी चाहिए, चाहे वह कार्य परोपकार, सुसमाचार प्रचार के या शिक्षा देने का ही हो। विभिन्न मण्डलियों द्वारा स्वतन्त्र इच्छा से कलीसिया में सहयोग करना पवित्र शास्त्र के अनुसार है। नि:संदेह, किसी भी मण्डली को किसी दूसरी मण्डली की सहायता करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता।

स्थानीय संगठन

यदि प्रत्येक स्थानीय मण्डली अपना प्रबन्ध स्वयं करती है, तो स्थानीय कलीसिया किस प्रकार संगठित होनी चाहिए? नया नियम इस विषय पर ज़्या अगुआई देता है? नया नियम स्पष्ट करता है कि उस समय स्थानीय कलीसियाएं कई ''पदों,'' ''कार्यों,'' या ''लीडरशिप की भूमिकाओं'' को ज़्या नाम देती थीं। इनसे इसके संगठन का पता चलता था।

कलीसिया की अगुआई के लिए प्राचीन (ऐल्डर) होते हैं। नये नियम के समय में प्रत्येक स्थानीय कलीसिया की अगुआई के लिए प्राचीनों को नियुज़्त किया जाता था। प्रेरितों 14:23 कहता है, ''और उन्होंने हर एक कलीसिया में उन के लिए प्राचीन ठहराए, और उपवास सहित प्रार्थना करके, उन्हें प्रभु के हाथ सौंपा जिस पर उन्होंने विश्वास किया था'' (तीतुस 1:5 भी देखें)। इन ऐल्डरों को कई नामों से जाना जाता था, जिनमें से प्रत्येक नाम से कलीसिया में उनकी भूमिका का पता चलता था। वे *प्राचीन* थे (प्रेरितों 14:23; प्रेरितों 20:17; तीतुस 1:5; 1 पतरस 5:1; यूनानी शज़्द *प्रेसज़्यूट्रोस* से), जो इस बात की जानकारी देता है कि वे बुज़ुर्ग, अधिक अनुभवी व बुद्धिमान पुरुष होते थे। वे *बिशप* या अध्यक्ष होते थे (प्रेरितों 20:28; फिलिप्पियों 1:1; तीतुस 1:7; यूनानी शज़्द *एपिस्कोपोस* से) जिससे यह पता चलता है कि वे अध्यक्ष होते थे। वे *पास्टर्स* या चरवाहे होते थे (प्रेरितों 20:28; इफिसियों 4:11; 1 पतरस 5:2; यूनानी शज़्द *पोयमेन* से) जिससे पता चलता है कि उन्हें झुंड अर्थात कलीसिया के लिए चरवाहों के रूप में काम करना होता था।

यह स्पष्ट है कि ये तीनों शज़्द एक ही ''पद'' के लिए हैं। उदाहरण के लिए, प्रेरितों 20:17, 18 के अनुसार, पौलुस इफिसुस की कलीसिया के ''ऐल्डरों'' से कह रहा था, ''अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिस में पवित्र आत्मा ने तुज़्हें अध्यक्ष ठहराया है; ...'' (प्रेरितों 20:28)। ''प्राचीनों'' ''अध्यक्ष'' ही होते थे, और हिन्दी की बाइबल में ''अध्यक्ष'' लिखकर नीचे टिप्पणी में एकवचन शज़्द ''बिशप'' (*एपिस्कोपोस*) ही दिया गया है जो

यूनानी धर्मशास्त्र का सही अर्थ देता है। इस प्रकार, ''ऐल्डरों'' को ही ''बिशप'' कहा जाता था। इन ''ऐल्डरों'' या ''बिशपों'' को झुंड का ''चरवाहा'' कहा गया है। प्रयुज़्त यूनानी शज़्द ''पास्टर'' या ''चरवाहा'' (*पोयमेन*) का क्रिया रूप है। प्राचीनों/ऐल्डरों ने चरवाहों की तरह काम करना होता था; उन्हें ''पास्टर'' बनना आवश्यक था। इस प्रकार ''प्राचीन'' ''बिशप'' और ''पास्टर्स'' सभी शज़्द एक ही समूह के लोगों के लिए हैं। (KJV और NRSV में तीतुस 1:5, 7 तथा 1 पतरस 5:1, 2 देखें)। मसीह के झुंड की अगुआई के लिए इन लोगों में विशेष योग्यताएं होनी आवश्यक थीं (1 तीमुथियुस 3; तीतुस 1)।

कलीसिया की सेवा के लिए डीकन होते हैं ''डीकन'' शज़्द *डायाकोनोस* से लिया गया है और इसका मूल अर्थ सेवक या मिनिस्टर है। यह हमेशा एक विशेष समूह के उन लोगों पर लागू नहीं होता जिन्हें विशेष रूप से सेवा के लिए ठहराया गया था। एक अर्थ में, सभी मसीहियों के लिए सेवक होना आवश्यक है। परन्तु फिलिप्पियों 1:1 और 1 तीमुथियुस 3 से स्पष्ट है कि विशेष अर्थ में, डीकन होते थे। इसके अतिरिज़्त कुछ लोगों का मानना है कि प्रेरितों 6 अध्याय में चुने जाने वाले लोग डीकन ही थे, ज़्योंकि उनकी भूमिका ''खिलाने पिलाने'' की सेवा के रूप में थी।

प्राचीनों की तरह ही, डीकनों के लिए प्रयुज़्त होने वाले ''पद'' से भी यही पता चलता है कि उनका काम *सेवा* करना था। *''डीकन'' के शीर्षक में किसी प्रकार के अधिकार का पता नहीं चलता।* डीकनों के सज़्बन्ध में नीचे दिए गए सुझावों पर विचार करें:

(1) वे प्राचीनों/ऐल्डरों के बराबर नहीं होते, अर्थात प्राचीनों को कलीसिया के (''आत्मिक'') काम के एक पहलू पर नियन्त्रण मिलता है और डीकनों को दूसरा (''अर्थात भौतिक'') काम मिला होता है।

(2) वे प्राचीनों के कार्यक्रम को स्वीकार या अस्वीकार करने का काम करने वाले या प्राचीनों को सुझाव देने वाले सलाहकारों का अलग सभामण्डल नहीं हैं। (वे ऐसे सुझाव दे सकते हैं, परन्तु यह काम कोई भी मसीही कर सकता है।)

(3) बेशक बहुत सी बातों में उनकी योग्यताएं प्राचीनों जैसी ही हैं, परन्तु कोई पुरुष अपने आप डीकन के पद से ऐल्डर नहीं बन सकता।

(4) इस बात पर प्रश्न उठाया जा सकता है कि सेवा न करने वाले डीकन को डीकन माना भी जाए या नहीं।

(5) ''डीकन'' के शीर्षक में कोई अधिकार तो नहीं है, परन्तु डीकन या सेवक को कलीसिया में विशेष प्रकार का या विशेष कार्य करने की सेवा दी जा सकती है। ऐसा होने पर, उसे उस कार्य पर अधिकार मिलता है। उस कार्य को पूरा करने के लिए उसे एक अगुआ बनना आवश्यक हो सकता है अर्थात वह एक कार्य को पूरा करने के लिए दूसरों के कामों की अगुआई करता है। उसे ऐसा कोई भी अधिकार सौंपा गया होता है। उसके पास यह अधिकार उस कार्य के पूरा होने तक ही रहता है।

(6) रोमियों 16:1 में फीबे का उल्लेख एक सेवक के रूप में मिलता है। कुछ लोगों का मानना है कि इस आयत में ''सेवक'' शज़्द का अर्थ यह है कि पहली शताज़्दी की

कलीसिया में महिला डीकन भी होती थीं। यहां लिखा है, ''मैं तुम से फीबे की जो हमारी बहन और किंख्रिया की कलीसिया की सेविका है, बिनती करता हूं।'' अन्य लोगों का मानना है कि रोमियों 16:1 में ''सेविका'' के लिए यूनानी शज़्द का उस तकनीकी अर्थ में इस्तेमाल नहीं किया गया जिसमें फिलिप्पियों 1:1 में इसका इस्तेमाल किया गया है, बल्कि उस अर्थ में किया गया है जिसमें कलीसिया का कोई भी सदस्य सेवक अर्थात *डाय कोनोस* अर्थात ''डीकन'' हो सकता है।

प्रचारकों व शिक्षकों के लिए स्थानीय कलीसिया के साथ काम करना ज़रूरी है। इफिसियों 4:11-13 में यह संकेत मिलता है कि नये नियम के समयों में कलीसिया को बनाने के लिए प्रचार करने तथा शिक्षा देने के आत्मिक दान दिए गए थे।

प्रचारक के लिए नये नियम में कई पदनामों का इस्तेमाल किया गया है। उनमें से कुछ ये हैं: *kerux* अर्थात संदेश का प्रचार करने वाला या ऐलान करने वाला (1 तीमुथियुस 2:7; 2 तीमुथियुस 1:11), और सुसमाचार प्रचारक, (इवैंजलिस्ट अर्थात *euangelistes*) अर्थात अच्छी खबर लाने वाला होता है (प्रेरितों 21:8; इफिसियों 4:11; 2 तीमुथियुस 4:5)। इन पदनामों से खोए हुए लोगों को सुसमाचार देने का पता चलता है। प्रचारकों की ज़िम्मेदारी प्रचार करने और कलीसिया के साथ काम करने की भी होती है। नये नियम का प्रमाण इन तथ्यों की पुष्टि करता है: (1) नये नियम के समयों में प्रचार के साथ विशेष काम या आत्मिक दान जुड़ा होता था (इफिसियों 4:11-13)। बिना किसी संदेह के, यह एक चमत्कारी दान था। यह दान आज चमत्कारी ढंग से नहीं बल्कि पसीना बहाने से मिलता है। (2) प्रचारक कई वर्षों तक एक ही स्थान में रहकर प्रचार कर सकते थे; वे किसी भी प्रकार, या सदा घूमकर प्रचार नहीं करते थे। (3) प्रचारकों को प्रचार करने के लिए, वेतन दिया जा सकता है और दिया भी जाना चाहिए। इसलिए वे कलीसिया के लिए पूर्णकालिक काम कर सकते थे। (4) प्रचारकों का काम कलीसिया को समझाने के साथ - साथ बाहर के लोगों में प्रचार करना भी होता था। (5) सभी प्राचीन/ऐल्डर प्रचार करने या सिखाने का काम नहीं करते थे (1 तीमुथियुस 5:17)। (6) प्रचारक को स्थानीय कलीसिया में काम दिया जाता था। वह काम ज़्या होता था? उज़र के लिए तीमुथियुस और तीतुस के नाम पौलुस की पत्रियां देखें।

स्थानीय कलीसिया के काम में प्रचारक का महत्व है। *परन्तु, नये नियम के समयों में प्रचारक कलीसिया पर अधिकार नहीं रखता था!* नया नियम सुसमाचारीय अधिकार की शिक्षा नहीं देता है। प्रचारक के पास अधिकार होता था, *परन्तु, अधिकार से वह केवल परमेश्वर के वचन का प्रचार ही कर सकता था!*

''शिक्षक'' के लिए यूनानी शज़्द *didaskalos* है। इस शज़्द का इस्तेमाल कई उन जगहों पर किया जाता है जहां शिक्षा देने को विशेष दान के रूप में बताया गया है (इफिसियों 4:11-13; रोमियों 12:7; 1 कुरिन्थियों 12:29)। यह भी ज्यादातर दान ही होता था। प्राचीनों/ऐल्डरों के लिए सिखाने के योग्य होना और प्रचारकों के लिए सिखाना आवश्यक है। शायद कुछ अर्थ में हर मसीही को सिखाने के योग्य होना आवश्यक है। स्पष्टत: कुछ लोगों में इस क्षेत्र में विशेष गुण होता है और उन्हें परमेश्वर के वचन की शिक्षा देने की विशेष ज़िज़्मेदारी मिली है।

दो प्रश्नों का उज़र देना अभी बाकी है।

संगठन की ज़्या आवश्यकता है? जो कुछ हमने पहले कहा है यदि वह सत्य है अर्थात हर मसीही बराबर है और उसका परमेश्वर से बराबर का सज़्बन्ध है, तो स्थानीय स्तर पर लीडरशिप के किसी प्रबन्ध के लिए संगठन आवश्यक ज़्यों है? इसका उज़र है: *इसमें लीडरशिप होगी! किसी भी समूह में संगठन/लीडरशिप का प्रबन्ध समा जाएगा।* परमेश्वर हमें अपने उद्देश्यों और हमारी भलाई के लिए, अर्थात उस संगठन और लीडरशिप के लिए सबसे अच्छी योजना देता है।

ज़्या संगठन के इस प्रबन्ध के बिना विशेषकर, प्राचीनों और डीकनों के बिना कलीसिया का अस्तित्व हो सकता है? हां। हम जानते हैं कि ऐसा सज़्भव है ज़्योंकि नये नियम के समयों में कुछ देर तक कलीसिया प्राचीनों के बिना ही थी। जितनी जल्दी सज़्भव हो सके कलीसिया को पूरी तरह से पवित्र शास्त्र के अनुसार संगठित हो जाना चाहिए। जब तक ऐसा नहीं होता तब तक तीतुस 1:5 के अनुसार, कलीसिया में कुछ ''रहता'' है। पौलुस ने तीतुस को लिखा था ''मैं इसलिए तुझे क्रेते में छोड़ आया था, कि तू शेष रही हुई बातों को सुधारे, और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर – नगर प्राचीनों को नियुज़्त करे।''

कलीसिया के अगुओं को अपने आपको ज़्या समझना चाहिए? इफिसियों 4:11–13 में इस प्रश्न का उज़र है: उन्हें अपने आपको दासों के रूप में देखना चाहिए जिन्हें परमेश्वर की ओर से विशेष गुण दिए गए हैं अर्थात दूसरों से अच्छे नहीं, लेकिन अन्य सदस्यों से अलग गुण दिए गए हैं, और कलीसिया की सहायता के लिए उनके लिए उन गुणों का इस्तेमाल करना आवश्यक है।

सारांश

निष्कर्ष में मैं प्रभु की कलीसिया के संगठन के लिए नये नियम की योजना को अपनाने का अनुरोध करता हूं। कुछ लोगों के लिए, कलीसिया का संगठन कोई छोटी बात हो सकती है, जिसका महत्व शिक्षा और व्यवहार से अधिक नहीं है। तथ्य यह है कि इतना बड़ा धर्मत्याग आम तौर पर कलीसिया के संगठन में बदलाव करने से ही आता है। लगता है कि जब संगठन के लिए नये नियम में दिए गए नज़्शे को छोड़ दिया जाता है, तो कलीसिया में हर प्रकार के परिवर्तनों का द्वार खुल जाता है।

जब परमेश्वर ने संगठनात्मक ढांचे के साथ कलीसिया की स्थापना की थी, तो वह जानता था कि वह ज़्या कर रहा है! अगुआई देने वाले लोग उसे तभी प्रसन्न कर सकते हैं और आत्मिक रूप से लाभ ले सकते हैं यदि वे उसके दिए हुए निर्देशों में रहकर काम करें।